'शिव' और शिवरात्रि

शिव का अर्थ है कल्याणकारी, मंगलकारी अथवा शुभकारी। इसीलिए **शिव** परमपिता परमात्मा का कर्त्तव्य वाचक नाम है क्योंकि परमात्मा ही कल्याणकारी, मुक्तिदाता और सद्गतिदाता है। शिव के जो अन्य नाम मुक्तेश्वर, पापकटेश्वर, सोमनाथ, पशुपतिनाथ इत्यादि हैं। उनमें भी यह सत्यता सिद्ध है कि शिव शब्द परमपिता परमात्मा का गुणवाचक है। शिव का नाम पशुपति इसलिए है कि आत्मा को अपने कर्म रूपी पेशों में बंधी हुई होने के कारण "पशु" कहा जाता है और शिव आत्माओं को उन बन्धनों से छुड़ाने वाले त्रितापहारी और भव भयहारी हैं।

शिवलिंग शिव की ही प्रतिमा है: शिव की पूजा भारत में चिरातीत से शिवलिंग के रूप में की जाती है और एक समय ऐसा भी था जबकि सारे विश्व में परमात्मा का इसी रूप में पूजा की जाती थी।

रात्रि और महारात्रि अज्ञानता और अपराध के सूचक: "रात्रि" शब्द अज्ञान अन्धकार, पाप और तमोगुण का वाचक है। फाल्गुन मास देशीय गणना के अनुसार वर्ष का अन्तिम मास है। अतः फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चौदहवीं रात्रि महारात्रि है। वह कल्प के अंत में होने वाली घोर अज्ञानता और अपवित्रता की द्योतक है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से द्वापर युग और कलयुग को 'रात्रि' अथवा कृष्णपक्ष तो कहा ही गया है इसमें कलियुग का पूर्णान्त से कुछ वर्ष पहले का जो समय है वह उपरान्त कृष्ण पक्ष की चौदहवीं रात्रि के समान है।

अतः शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की अन्तिम रात्रि (अमावस्या) से एक दिन पहले मनाई जाती है, क्योंकि परमपिता परमात्मा था जबकि सारी सृष्टि अज्ञानांधकार में थी। इसलिए शिव का सम्बन्ध रात्रि से जोड़ा जाता है।

शिव कर्त्तव्य कैसे करते हैं?: परमपिता परमात्मा शिव कर्मातीत और सदा मुक्त हैं। वे बाल युवा वृद्ध अथवा जन्म-मरण, रूप-कला के वश में नहीं होते हैं अर्थात् वे महाकालेश्वर हैं। संसार भर के नारियों को मुक्त करने के लिए लोगों को पापों तथा दुःखों से छुटकारा दिलाने के लिए अर्थात्

सतयुगी पावन तथा सुखी सृष्टि रचने के लिए वे कलियुग के अन्त में साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं, जिसका नाम वे 'प्रजापिता ब्रह्मा' रखते हैं। उनके मुख से ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर वे मनुष्य को देवता बनाते हैं। इस प्रकार ही वे भारत वासियों का चारित्रिक नव-निर्माण करके सतयुगी दैवी सृष्टि की पुर्नस्थापना करते हैं।

संसार का कल्याण करने की ईश्वरीय युक्तिः कलियुग के अन्तिम चरण में अज्ञान रूपी रात्रि में जब परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होते हैं तब वे मनुष्य मात्र को यह शिक्षा देते हैं कि काम वासना का भोग एक जीवन घातक विष लेने के समान है जिससे कि मनुष्य के जन्म-जन्मान्तर का सर्वनाश होता है। अतः ज्ञान रूपी सोम अथवा अमृत पिलाकर परमपिता परमात्मा शिव जिन्हें ही सोमनाथ और अमरनाथ भी कहा जाता है। इस संसार सागर से सारा विष हर लेते हैं इसी कारण उन्हें "विषहर" भी कहा जाता है।

परमात्मा शिव के उसी कर्त्तव्य की स्मृति में आज भी लोग जब शिवरात्रि का उत्सव मनाते हैं तब ब्रह्मचर्य व्रत का पालत करते हैं।

शिवरात्रि पर जागरण बलि और भेंटः शिवरात्रि के अवसर पर भक्त लोग जागरण करते हैं। वास्तव में जिस जागरण से हम परमपिता शिव को प्रसन्न कर उनसे वरदान ले सकते हैं वह आध्यात्मिक जागरण ही है। परन्तु लोग जागरण के सही रहस्य को न जानने के कारण केवल एक रात्रि को न सोने ही का व्रत ले लेते हैं, जबकि ब्रह्मचर्य ही वास्तविक व्रत है जिस द्वारा कामारि शिव का सामीत्य प्राप्त कर सकते हैं। अतः शिव रात्रि के उत्सव पर हमें सदा यह याद रखना चाहिए कि ज्ञान द्वारा आत्मा की जागृति ही मनुष्य का वास्तविक जागरण है, काम- क्रोधादि विकारों का त्याग ही शिव पर चढ़ाई गई वास्तविक बलि है। स्वभाव की कटुता का परित्याग ही शिव पर अक चढ़ाना है। और ईश्वरीय मस्ती अथवा नारायणी नशा ही वास्तविक नशा है। इनके द्वारा शिवरात्रि मनाना ही इस त्योहार को वास्तविक रीति से मनाना है। **६७ वीं शिव जयन्ती पर परमात्मा शिव का सर्व आत्माओं के प्रति सन्देशः-**

"मेरे प्यारे बच्चों - आप जन्म-जन्मान्तर से मुझे यथार्थ रीति जाने बिना ही मेरी जड़ प्रतिमा की पूजा जागरण तथा उपवास करके शिवरात्रि मनाते आए हो। अब अपने इस अन्तिम जन्म में शेष थोड़े समय के लिए सच्चे ज्ञान द्वारा अज्ञान की कुम्भकरणी नींद से जागो और बुद्धि योग मेरे साथ लगाकर सच्चा-सच्चा उपवास (अर्थात परमात्मा के समीप वास) करो। इस ४९वीं शिव जयन्ती पर अपने मनोविकारों, कुटिल संस्कारों और अशिष्ट व्यवहार को मेरे पर बलि चढ़ा दो, तब ही जीवन सुख-शांति सम्पन्न बनेगा।" अतः शिव का मन्त्र अथवा तारक मन्त्र है - "पवित्र बनो, योगी बनो।"

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचस

www.bkvarta.com

www.bkvarta.com (Brahamkumaris First Hindi Web Portal)